मांझी नैया ढूंढ़े किनारा

कहानी / शरोवन

हसरतों की दुनियां में प्रेम की अपनी राहें बना कर उन पर चलने वाले जब वक्त आने पर अपना फैसला अचानक ही किसी दबाब में आकर बदल लेते हैं तो इसको इंसान की मजबूरी न कह कर उसके व्यक्तित्व की वह सबसे बड़ी कमजोरी कहा जाता है कि जिसके सबब से न केवल किसी दूसरे का विश्वास ही टूटता है, बल्कि साथ में सजे सजाये सपनों का ख़ाका ही बदल जाता है। ऐसी परिस्थति आने पर मनुष्य का अपना जो भी हश्र होता है वह तो दुनियां देखती ही है, पर जिसकी अपनी हसरतें आस्थाओं की अर्थी देख कर ख़ाक होती हैं, क्या उसके लिये कोई कुछ सोच पाता है? मर्मस्पर्शी मसीही कथाओं

के कहानीकार शरोवन की लेखनी की एक ऐसी देन कि जिसको आप बार बार पढ़ने पर विवश हो सकते हैं।

'सवालों से भरी ज़िन्दगी कहीं ठहर चुकी होती तब तो आरज़ू करने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। राहे सफ़र में यदि तुम कहीं भी मिली नहीं होती तो फिर अपनी ख़ाली झोली फैला कर मांगने की बात ही नहीं होती। मनुष्य के जीवन की परिभाषा क्या है? शायद कोई भी ढंग से नहीं बता सकेगा? कितनी सहजता से मेरे जीवन की नाव सागर की डगर पर चली जा रही थी। कभी सोचा भी नहीं था कि एक हल्की सी लहर ने अचानक करवट ली और पतवार हाथ से छूट गई। साथ में बैठे हुये पथिक को निर्मम सागर की लहरों ने दबोच लिया और अब मैं अकेला। नितान्त थका हुआ। बिल्कुल ही मायूस, निराश और बाकी बचे हुये जीवन के उद्देश्य से बेमकसद और बेमतलब कहां चला जा रहा हूं। ये कठोर रास्ता न जाने कहां जाकर समाप्त होगा? मैं कब और कहां जाकर ठहरूंगा? कुछ भी तो मालुम नहीं। ऐसे में जब घ्यान आता है तो खुद व खुद तुम्हारी तस्वीर आंखों के पर्दे पर आकर स्थर हो जाती है। जानता हूं कि तुम जंहा से चली थी, अभी भी वहीं पर खड़ी हो,

और मैं तुम्हें छोड़ कर आगे तो निकल गया था, मगर तकदीर ने मुझे फिर से तुम्हारे पास लाकर खड़ा कर दिया है। चाहो तो मुझे मॉफ कर सकती हो। संभाल भी सकती हो। एक बार फिर से उसी जीने के ढंग के मार्ग पर आकर साथ चल सकती हो कि, जहां पर से किसी दिन हम दोनों अलग हो गये थे।

असाहिल'

मेरब ने ईमेल पढ़ा तो, पढ़ते ही उसके मस्तिष्क के सारे सोये हुये तार इस प्रकार से झनक गये कि उन्हें फिर खूब अच्छी तरह से उलझते देर भी नहीं लगी। तुरन्त ही वह दोनों हाथों से अपना सिर पकड़ कर बैठ गई। कितने दिनों के पश्चात किसी ने उसे आज फिर से छेड़ दिया था। इस प्रकार कि उसे क्षणिक खीज तो हुई ही, साथ ही उसका बना बनाया सारा मूंड भी खराब हो गया। आज फिर असाहिल ने उससे वही घिसी पिटी अपनी आरजू दोहराई थी, कि जिसे वह पिछले दो वर्षों से उसे याद दिलाता आ रहा था। वह जानती है कि असाहिल की इन मिन्नतों में उसके प्रति सहानुभूति थी। दर्द था। एक आवाज़ थी, और साथ ही अपनी की हुई किसी बड़ी भूल का एहसास भी था। मगर जिस स्थान पर वह उसे तन्हा और अकेला छोड़ कर

चलता बना था, वहां पर वह तो मात्र बाइबल के लूत की पत्नी के समान केवल नमक का खंभा बन कर ही रह गई थी। जीवन के इस कठोर और कड़वे सत्य को वह शायद नहीं समझ पा रहा था। उसकी कहानी लूत की पत्नी से कितना कुछ मिलतीजुलती है। अन्तर है तो केवल इतना ही है कि, लूत की पत्नी ने खुद गलती की थी, और उसे सजा मिली थी। मगर अपने बारे में गलती लूत के स्थान पर असाहिल ने की थी, और सजा वह खुद भुगत रही थी। आज वह जिस स्थान पर है, जैसी भी है, और जिस हाल में भी असाहिल ने उसे छोड़ कर किनारा किया था, वहां पर रह कर उसके मन की सारी अभिलाषायें, विचार और भावनायें अपना दम तोड़ चुकी हैं। आज जीने का उसका कोई भी मकसद बाकी नहीं रह जाता है। आज तो उसे कुछ भी पिछला याद नहीं रहा है। याद है तो वह केवल इतना ही जानती है कि असाहिल के साथ साथ चलते हुये अचानक ही एक दोहराहा आया और उसके साथ चलने वाले ने अपना मार्ग बदल लिया था। फिर जो कुछ भी हुआ उसमें उसके जीवन का तमाशा बना था। लोगों ने एक खेल देख कर अपना जैसे मनोरंजन किया, और फिर सब कुछ खत्म हो गया। आज तो उसके मन के अंदर कभी ठहरी हुई

प्यार की खुशबू की जली हुई राख़ तक नहीं बच सकी थी। आज तो वह लूत की पत्नी के समान नमक के स्थान पर जैसे पत्थर का बेजान बुत बन कर जीने पर विवश थी। विवश इसलिये है कि जीवन समाप्त करने का अधिकार भी तो परमेश्वर ने अपने पास ही रख छोड़ा है। यदि ऐसा नहीं होता तो वह न जाने कब की आत्महत्या कर चुकी होती।

.....सोचते सोचते मेरब की आंखों के सामने उसके अतीत की दुखभरी यादें किसी कागज की महीन महीन कतरनों के समान स्वत ही बिखरने लगीं। उसके जिये हुये दिनों की ये वह स्मृतियां थीं कि जिनके हरेक टुकड़े में उसकी मायूस, निराश और जैसे जिन्दगी से निहायत छली और थकी हुई लालसाओं का कड़वा और कसैला विष भरा हुआ था।

असाहिल ने उसके शांति से भरे सामान्य जीवन में कब प्रवेश किया था? जहां तक उसे याद है उससे उसकी पहली भेंट अचानक ही तब हो गई थी जब कि वह अपने पिता के मित्र के लड़के के विवाह की बारात में मध्य प्रदेश के एक बड़े शहर व जिले दुर्ग में गई थी। अपने निवास स्थान से दुर्ग तक का एक्सप्रेस रेल का पूरे 12 घंटों का सफर द्वा। फिर वहां पर भी विवाह की तमाम रस्में पूर्ण

होने के पश्चात जब वह अन्य बारातियों के साद्धा विवाह की पार्टी में बैठी हुई थी, कि तभी उसकी परखने वाली नज़रों ने असाहिल के मन के इरादों को भांप लिया था। असाहिल दूर से ही उसमें रूचि ले रहा था। साथ ही वह बारातियों व अन्य विवाह में सम्मिलित हुये मेहमानों को खाने के व्यंजन आदि वितरित करने में सहायता तो कर ही रहा था मगर फिर भी वह किसी न किसी बहाने से मेरब के आसपास ही बना रहना चाह रहा था। तब मेरब ने असाहिल की इस हरकत को क्षणिक भावुकता की रूचि समझते हुये कोई विशेष महत्व नहीं दिया था। लड़के तो प्राय: ऐसा करते ही हैं, यही सोच कर वह सामान्य हो गई थी। परन्तु विवाह के मुख्य भोज के समय पर जब असाहिल मेरब का आवश्यकता से अधिक घ्यान रखने लगा तो उसको दाल में कुछ काला नज़र आने लगा। उस समय असाहिल ने अपनी तरफ से मेरब को खाने की हरेक वस्तु अच्छी से अच्छी देने की कोशिश तो की ही, साथ ही वह उससे बात करने का अवसर भी ढूंढ़ने लगा था। परन्तु विवाह की अधिक भीड़ भाड़ और व्यस्तता के दौरान वह ऐसा करने में सफल नहीं हो सका था। फिर विवाह के भोज का कार्यक्रम भी समाप्त हो गया। रात में मनोरंजन का थोड़ा बहुत

कार्यक्रम बारातियों के लिये रखा गया था, मगर मेरब सफर की थकान के कारण अपने कमरे में जहां पर अन्य बारातियों को ठहराया गया था आकर जल्दी ही सो गई थी।

फिर दूसरे दिन जब विदा की रस्म आई तब भी उसको असाहिल वहां पर दिखाई दिया। वह लड़की वालों की ओर से सारे बारातियों को विदा की रस्म पूरी करवाने में मदद कर रहा था। लेकिन फिर भी बारातियों के जाने से पहले वह साहस जुटा कर मेरब के पास आया और उससे बोला था कि,

'दो दिन आप यहां रहीं, बड़ा ही अच्छा लगा। आपसे ये दो दिन की मुलाकात मेरे लिये तो बहुत ही अधिक अविस्मरणीय रहेगी। अब फिर कब भेंट हो सकेगी आपसे?'

'अब की बार आप अपनी शादी कीजिये और निमंत्रण दीजिये, तो जरूर ही मैं आऊंगी।' ये कहती हुई मेरब बारात की सजी हुई उस बस में जो उन्हें स्टेशन तक ले जा रही थी, जाकर बैठ गई थी। घर आकर मेरब ने सोचा था कि असाहिल की बात और उसके साथ के गुज़ारे हुये कुछेक पलों की याद ठीक वैसे ही समाप्त हो गई है, जैसे कि भरे सागर की परेशान लहरें किनारे आकर भी किनारा न पाकर पुन वापस लौट जाया करती हैं।

समय बीतता चला गया। बात आई गई हो गई। समय ने करवट ली। मेरब अपनी कालेज की पढ़ाई में व्यस्त हो गई। वर्ष की मुख्य परीक्षायें हुईं और वह स्नातकोत्तर की परीक्षा पास करके नौकरी की तलाश में व्यस्त हो गई। अपनी व्यस्तता में वह बिल्कुल ही भूल गई कि कब वह दुर्ग किसी के विवाह में गई थी। असाहिल से वह कहां मिली थी? वह कौन था? और उसने क्या कहा था? ऐसा होना भी बहुत स्वभाविक था, क्योंकि उसके मन में ऐसी कोई बात ही नहीं थी कि जिसके कारण वह ये सब कुछ याद रख सकती। असाहिल उसके जीवन में कभी क्षण दो क्षण के लिये आया था और बड़ी ही सहजता से चला भी गया था। ऐसी दशा में उसे नाहक याद करने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता था। मेरब के दिन नौकरी की तलाश और जीवन की व्यस्तता में लगातार बीतते जा रहे थे। अभी तक उसे नौकरी भी नहीं मिली थी। कई एक स्थानों पर उसने प्रार्थना पत्र भर दिये थे। दो तीन जगहों से उसे साक्षात्कार के लिये बुलाया भी गया था, मगर अभी तक कहीं से भी उसको सन्तोषपूर्ण उत्तर प्राप्त नहीं हो सका था। आरंभ की समस्त औपचारिकतायें पूरी करने के बाद भी उसे कहीं से भी नौकरी का बुलावा नहीं मिला था। नौकरी मिलने

की आस में वह प्रतिदिन ही अपनी डाक आने का इंतजार करने लगी थी।

फिर एक दिन जब वह ऐसे ही अपनी डाक में आये हुये पत्रों और लिफाफों को देख रही थी कि, तभी उसे एक बड़ा ही प्यारा और आकर्षक लिफाफा प्राप्त हुआ। उसने जिज्ञासा में शीघ्र ही खोल दिया। फिर जब खोल कर देखा तो उसके अंदर असाहिल का पत्र था, जिसे उसने बहुत ही अच्छे ढंग से मेरब के लिये लिखा था। मेरब ये बात उसकी लिखाई को देख कर ही समझ गई थी। तब मेरब ने पत्र को पढ़ा तो उसमें लिखा था कि,

'मेरब,

हो सकता है कि इतने अरसे में तुम मुझे बिल्कुल ही भूल गई हो? मगर मैं कहां तुम्हें भूलने वाला हूं। अभी तक तुम जैसी मानवी की सुन्दर छवि को अपने मन में बसाये हुये तुम्हारे करीब आने की दूरी को हर पल कम करने की कोशिश करता आ रहा हूं। याद है कि एक दिन दुर्ग से वापस जाते समय मैंने तुमसे अगली भेंट के लिये पूछा था। उसके उत्तर में तुमने कहा था कि अगर मैं अपनी शादी के निमंत्रण में तुम्हें बुलाऊंगा तो तुम जरूर आओगी। सो अब मैं अपना विवाह कर रहा हूं। जिस लड़की से मैं विवाह कर रहा हूं, उसका

नाम 'मेरब' है। जिस दिन तुम आओगी, उसी दिन विवाह की तारीख भी पक्की हो जायेगी। ये तो तुम अच्छी तरह से जानती होगी कि यदि तुम नहीं आईं तो मेरा विवाह कभी भी नहीं हो सकेगा। आशा है कि तुम मेरे इस निमंत्रण को मना नहीं करोगी। और सब ठीक है। मेरी पढ़ाई खत्म हो चुकी है, और अब मैं यहीं पर स्कूल इंस्पेक्टर के पद पर कार्य कर रहा हूं।

असाहिल।'

मेरब के लिये असाहिल का ये वह पहला पत्र था कि, जिसे पढ़ने के बाद उसके दिल और दिमाग के सारे सोये हुये तारों में एक झनकार सी मच गई थी। साफ जाहिर था कि इतने वर्षों के लम्बे अंतराल के पश्चात भी असाहिल ने उसे भुलाया नहीं था। दुर्ग में हुई केवल एक दो दिन के बीच छोटी सी मुलाकात के दौरान बिताये हुये लम्हों को वह अपने जीवन की महत्वपूर्ण राह बना कर उस पर चलता आ रहा है। और आज आखिरकार उसने अपने मन में छिपी हुई बात उससे कह ही दी थी। यही सोच सोच कर मेरब तब कई दिनों तक काफी परेशान सी बनी रही थी। परेशान इस कारण थी कि असाहिल ने उससे कुछ कहा था, और इस कहे हुये का उसे एक ठोस निर्णय लेकर उत्तर देना था। फिर

निर्णय भी कोई गुड्डे और गुड़िया का खेल नहीं था। उसकी पूरी ज़िन्दगी का प्रश्नचिन्ह उसकी नज़रों के सामने स्थिर

हो गया था। ये एक ऐसा सवाल था जिसे वह आसानी से बगैर कुछ भी कहे सुने और निर्णय लिये हुये नकार नहीं सकती थी। फिर जो इंसान चंद लम्हों की मुलाकात को अपनी ज़िन्दगी का सबसे मुख्य आधार बनाकर उसके जीवन में प्रवेश करने की योजना बना बैठा हो, वह भी इतनी आसानी से दूर हटने वाला नहीं है। ये तथ्य भी वह भलीभांति समझ चुकी थी। यदि उसने असाहिल को कोई उत्तर नहीं दिया और उसे बीच में ही लटकाये रही, तब वह उसके पीछे आने से रूकने वाला भी नहीं था। तब मेरब ने अपनी इस परेशानी की बात असाहिल के पत्र को अपनी उस सहेली को दिखा कर कही जो कभी उसके साथ दुर्ग गई थी। तब उसकी सहेली ने भी उसको यही उत्तर दिया कि,

'सोच ले, तेरे लिये ऑफर है। कोई जल्दबाजी मत कर बैठना। सोच ले कि वह पास्टर का लड़का है।'

उसकी सहेली ने भी एक प्रकार से बात सही कही थी। असाहिल में चाहे सारी अच्छाइयां क्यों न हों, पर उन दोनों के विचारों से उसमें जो सबसे बड़ी कमी थी, वह केवल यही कि वह पास्टर का लड़का

था, क्योंकि आज तक मेरब ने कभी भी किसी भी पास्टर के लड़के की तारीफ किसी से भी नहीं सुनी थी। तब मेरब कोई निर्णय ले पाती इसी बीच उसको एक स्थान से नौकरी का निंमत्रण आया तो वह अध्यापिका बन कर झांसी के एक स्कूल में पढ़ाने चली गई। चली गई तो नई नौकरी और नये स्थान में समायोजित होने की कोशिश में वह फिर एक बार असाहिल के बारे में भूल गई। लेकिन एक दिन असाहिल उसे आमने सामने तब अचानक से मिल गया था, जब कि वह स्थानीय स्कूलों की एक समिति में अपने स्कूल की तरफ से मुख्य प्रतिनिधि बन कर गई थी। चूंकि असाहिल स्कूल इंस्पेक्टर था और उस समय वह उसी क्षेत्र में कार्य कर रहा था, सो वह भी वहां पर समिति में आया हुआ था। तब मेरब असाहिल को देख कर जहां खुश हुई थी वहीं वह उसको देख कर घबरा भी गई थी। खुशी उसे इसलिये हुई थी कि कम से कम एक गैर मसीही क्षेत्र में उसे कोई तो अपना मसीही व्यक्ति नज़र आया था, और घबरा वह इसलिये गई थी, क्योंकि वह एक प्रकार से असाहिल की मुज़रिम थी, और आज रंगे हाथों जैसे पकड़ ली गई थी। वह जानती थी कि असाहिल उसे पसन्द करता है, और उससे विवाह भी करना चाहता है, मगर उसकी बात का

उसने आज तक कोई ठोस उत्तर नहीं दिया था। तब असाहिल से हुई इस अचानक भेंट के समय मेरब ने सोचा था कि अब असाहिल उससे खूब ही शिकवे और शिकायतें करेगा। मगर उसकी धारणा के अनुसार ऐसा कुछ भी नहीं हुआ था। असाहिल उसके साथ बहुत ही नम्रता और मित्रभाव के साथ पेश आया था। उसने एक बार भी अपनी तरफ से ये जाहिर नहीं होने दिया कि कभी उसने उसे कोई पत्र भी लिखा था। बजाय इसके कि वह उससे कोई शिकायत आदि करता उसने मेरब की अपनी ओर से अतिरिक्त सहायता ही की। साथ ही उसने ये भी बताया कि वह आजकल ग्वालियर में नियुक्त है और झांसी का क्षेत्र उसके कार्यक्षेत्र में आता है। उसके अतिरिक्त जब असाहिल ने उसे एक छोटी सी चाय साथ में पीने का निमंत्रण दिया तो वह भी मना नहीं कर सकी थी। इस बीच वह उससे तमाम तरह की बातें करता रहा था। मगर अपने मन की बात वह उससे आमने सामने फिर भी नहीं कह सका था ।बाद में जब सारा काम समाप्त हो गया था तो वह वापस चली आई थी।

उसके बाद जब असाहिल को उसका पता और ठिकाना ज्ञात हो गया तो वह अक्सर ही उसको पत्र लिखने लगा। प्राय ही मेरब को डाक में उसके

पत्र मिलने लगे। अपने इन पत्रों के द्वारा कभी वह परोक्ष रूप में अपनी बात को दोहराता तो कभी हिन्दी फिल्मों के चुने हुये गीतों की लाइनें ही लिख कर भेज दिया करता था। ऐसे गीतों की पंक्तियों में, ' ऐसी कोई डोर नही, जिसका कोई छोर नहीं, ऐसी कोई मौज़ नहीं, जिसका कोई शोर नहीं। मांझी नैया ढूंढ़े किनारा ' विशेष हुआ करती थीं। फिर जब ऐसा प्राय ही होने लगा तो एक दिन मेरब ने असाहिल की पसन्द को महत्व देते हुये अपने हथियार डाल दिये। उसने उसकी बात मान ली, और भविष्य में असाहिल को अपने जीवन का पति बनाने का निर्णय कर लिया। वह जानती थी कि असाहिल उसकी हां सुन कर बहुत ही खुश होगा। और फिर हुआ भी ऐसा ही। असाहिल भविष्य के सजाये हुये सपनों को साकार होते देख खुशियों से फूला नहीं समाया। वह जैसे ज़िन्दगी की समस्त बहारें सामने आते देख झूमने लगा था। तब मेरब ने जब अपने घर पर असाहिल के बारे में बताया तो उसके मां बाप ने भी उससे यही कहा था कि, इधर उधर साथ साथ घूमने फिरने से बेहतर है कि जितनी जल्दी हो सके वह अपना विवाह कर ले। सो अपने माता और पिता की बात को ध्यान में रख कर वह अपने विवाह के सपने सजोने लगी थी।

फिर इतना सब कुछ होने के पश्चात असाहिल लगभग हर दूसरे हफ्ते मेरब से मिलने जाने लगा। अक्सर ही वह अपनी किसी न किसी छुट्टी में मेरब के पास पहुंच जाता था। फिर दोनों एक साथ घूमते, साथ आते जाते, किसी भी रेस्तंरा में बैठ कर चाय पीते, कुछ भी न खरीदना होता तब भी बाजार में घूमा करते और कभी कभी शाम का खाना या दोपहर का लंच भी कहीं भी साथ ही खा लिया करते। असाहिल जब भी झांसी मेरब के पास आने को होता तो वह उसे पहले ही से फोन करके सूचित भी कर दिया करता। तब इस प्रकार दोनों की भेंट पहले ही से निर्धारित किसी भी स्थान पर हो जाती थी।

दोनों का सिलसिला इसी तरह से चल ही रहा था। मेरब अब तक पूरी तरह से असाहिल के प्रति आसक्त हो चुकी थी। असाहिल में ही अब वह अपने जीवन का किनारा ढूंढ़ चुकी थी। इतना अधिक वह उस पर विश्वास कर उठी थी कि असाहिल के अतिरिक्त अब किसी अन्य दुआ या बन्दगी के लिये उसके हाथ उठते ही नहीं थे। जीवन के सारे सपने और सपनों का पूरा महल वह केवल असाहिल के नाम की नींव पर रख कर अभी बना ही रही थी कि अचानक से उसके जीवन में कोई

सैलाब सा आया और क्षण भर में ही उसकी ज़िन्दगी के सारे संजोये हुये सपने बहा कर साथ ले गया। असाहिल ने अचानक ही झांसी आना बंद कर दिया। आना बंद तो किया ही, साथ ही उसने मेरब को फोन भी करना बंद कर दिया। फिर जब मेरब ने उसके निवास स्थान पर फोन किया तो आरंभ में वह उसे पहले तो कभी मिला ही नहीं, फिर बाद में पता चला कि उसका स्थानान्तरण ग्वालियर से कहीं अन्यत्र हो गया है। तब मेरब को असाहिल के स्थानान्तरण से इतनी

अधिक चिन्ता नहीं हुई जितना कि उसकी चुप्पी और गुमशुदी को देख कर वह हैरान हो गई। फिर जब वह उसे कहीं भी नहीं मिल सका तो स्वत ही उसे दाल में कहीं काला नज़र आने लगा। उसे ये जान कर और भी आश्चर्य हुआ कि इतने वर्षो से प्यार के पुल खड़े करने वाला अपने सफ़र की मंजिल को सामने पाकर अचानक ही चुपचाप से गुम क्यों हो गया है? उसका तबादला हुआ या फिर कोई और बात हो गई? मगर उसे किसी भी तरह से बता तो देना चाहिये था? जो लड़की कभी आसानी से प्रेम की डगर पर अपने कदम नहीं रख सकी थी, उसी को उल्फतों और हसरतों की खुशबुओं में भीगे ख्वाब दिखा कर वह बीच रास्ते में अकेला क्यों छोड़

गया? अकेली, निराश और बेसहारा सी मेरब के सामने ये ऐसे प्रश्न थे कि जिनका उत्तर वह तब तक नहीं प्राप्त कर सकती थी, जब तक कि वह असाहिल से आमने सामने ढंग से बात नहीं कर लेती। ये तो वह जानती थी कि बगैर कुछ भी जाने सोचे वह किसी को भी दोष नहीं दे सकती थी।

मेरब के इसी उहापोह में कुछेक दिन और गुज़र गये। वह प्रतीक्षा करती रही, असाहिल की कोई भी सूचना मिलने की। मगर उसका इंतजार करना एक प्रकार से बेकार ही साबित हुआ। असाहिल ने न तो अपनी ही कोई खबर दी और ना ही मेरब उसके बारे में कुछ भी पता लगा सकी। इस प्रकार एक ओर असाहिल की गुमशुदी और दूसरी तरफ मेरब के अपने सजाये हुये सपनों के खंडर होते हुये महल, इन सबका परिणाम ये हुआ कि वह धीरे धीरे अंदर ही अंदर बुझने लगी। दिल में सजाई हुई हसरतें नाकाम और बेमुरब्बत प्यार के वादों की मज़ार सजते देख कर हर पल तड़पने लगीं। हर रात वह मन ही मन सिसक उठी। दिल के अंदर कहीं दूर तक कसक उसकी साथिन बन कर अपना डेरा डाल बैठी। वह बुझी नहीं, बल्कि सुलगने लगी। वह टूटी तो नहीं, पर कमजोर हो गई। वह सोचने लगी कि जो लड़की कभी आसानी से अपने प्यार का

इज़हार नहीं कर सकी थी, उसी का विश्वास इतना शीघ्र टूटने कैसे लगा। जिस असाहिल ने उसकी जीवननैया को पार लगाने के कभी तारीफों और विश्वासों के ढेर सारे बंडल बांध दिये थे, वही एन वक्त पर उसे सागर की मझाधारों में अकेला और तन्हा छोड़ कर चलता क्यों बना? अब तो वह उसके बारे में कुछ भी तब तक नहीं मालुम कर सकती थी जब तक कि वह उसे खुद न मिले। इतना
अधिक वह उस पर विश्वास कर बैठी थी कि उसने तो उसके मूल निवास स्थान का पता तक नहीं लगाया। वह तो उसके बारे में केवल इतना ही भर जानती है कि वह दुर्ग में उससे पहली बार मिली थी, मगर दुर्ग में भी वह कहां का रहने वाला है? ये भी उसे नहीं मालुम था। ऐसे में जब कभी भी वह अपने बारे में सोचती तो यही सोच कर रह जाती कि उसकी किस्मत भी कितनी अजीब है, सारी दुनियां में यही एक असाहिल रह गया था, उसे प्रीति के सब्ज बाग दिखाने के लिये। शायद वह ये भूल गई थी कि जिस इंसान का नाम ही 'असाहिल' हो वह किसी की ज़िन्दगी की नाव को क्या किनारा दे सकता है। जिस आदमी के जीवन के किनारे ही सदा डूबे रहे हों, वह कभी भी क्या किनारे आ सकेगा। कितना भला होता कि यदि उसने असाहिल

की बात नहीं मानी होती। वह उसके चक्कर में नहीं पड़ती। उस पर विश्वास नहीं करती। यदि उसने असाहिल पर विश्वास नहीं किया होता तो शायद आज उसको ये मनहूस दिन तो नहीं देखना पड़ता। अब तो अच्छा होगा कि वह उसको बिल्कुल ही भूल जाये और कभी भी भूले से उसके बारे में न सोचे। पुरूषों ने यूं भी कब किसी नारी की कोमल भावनाओं की कद्र की है। यदि की होती तो नारियों के सुलगने, टूटने और पिसने की दास्तॉने क्यों सुनने में आई होतीं ? क्यों कहानीकार 'शरोवन' को प्यार की दुखभरी कहानियां लिखने पर विवश होना पड़ता?

मेरब ने तब उपरोक्त रूप से ऐसा ही कुछ सोच कर अपने आपको किसी तरह से मन मार कर समझा लिया था। अपने घर पर भी उसने सारी बात अपनी मां को भी बता दी थी। फिर धीरे धीरे वह सामान्य रूप से अपने जीवन को व्यस्त रखने की कोशिश करने लगी। इस तरह से होते होते लगभग दो वर्ष और बीत गये। इतने अरसे में उसने असाहिल के बारे में सोचा तो बहुत परन्तु उसे अपने दिल और दिमाग पर कभी भी हॉवी नहीं होने दिया। केवल असाहिल के साथ गुजारे हुये सुनहले पलों को अपने जीवन का सबसे कड़वा विषय समझ

कर सदा के लिये बंद कर दिया। इतना अधिक कि पुरूषों की ओर देखने का भी उसका मन नहीं करता था। हरेक मनुष्य की नज़रों में उसे असाहिल के समान खोट नज़र आने लगी। अब वह केवल अपने काम से काम रखती। अपने निवास से पढ़ाने जाती और स्कूल समाप्त होते ही सीधे वापस आती। बस इतनी ही उसकी दिनचर्या रह गई थी, और साथ ही उसके बचे हुये जीवन का मकसद भी यही कि उसे केवल जीना था। वह भी इसलिये क्योंकि वह जिन्दा थी। जब कि सच्चाई ये थी कि असाहिल की निष्ठुरता ने तो उसे इस लायक भी नहीं छोड़ा था कि वह किसी के साथ पल दो पल के लिये मुस्करा भी सके। सो मेरब के दिन इसी तरह से व्यतीत होते जा रहे थे। अब तक असाहिल से न मिले हुये लग भग तीन वर्ष समाप्त होने जा रहे थे। और अब तक उसके दिल में जो आशा की किरण शेष रह गई थी, वह भी समाप्त हो चुकी थी। मगर एक दिन अचानक से उसे जब अपने स्कूल के पते पर असाहिल का पत्र मिला तो वह चौंक गई। असाहिल ने अपना ये पत्र उसे पंजीकृत डाक से भेजा था। इस पत्र में उसने अपनी इतने दिनों की गुमशुदी और अचानक से मेरब के सामने से गायब हो जाने की विवशता तथा अपने साथ हुई हरेक दुखद घटना का

वर्णन किया था। उसने बताया था कि यकायक ही उसे अपने घर पर बुलाया गया तो पता चला कि उसकी मां की तबियत एक दम से खराब हो गई थी, और मरने से पूर्व उसकी मां ने उससे ये वादा करा लिया था कि वह अपना विवाह उनकी अंतरंग मित्र की लड़की रिमझिम से करे, क्योंकि उसकी मां की यही विशेष इच्छा थी। सो इस प्रकार उसे अपनी मां के कहने के अनुसार करना पड़ा था। रिमझिम से उसका विवाह हो गया था, मगर उसकी तकदीर को शायद ये सब गवारा नहीं हुआ, और विवाह के ठीक बारह महीनों के बाद ही उसकी पत्नी रिमझिम उसके पहले बच्चे के जन्म के समय पर ही चल बसी, और साथ में उसके बच्चे को भी ले गई। अपने बच्चे और पत्नी की मृत्यु के पश्चात वह कैसे रहा। ये तो वही जानता है। असाहिल ने अपने बारे में इतना सब कुछ बताने के साथ साथ मेरब से अपने किये पर क्षमा भी मांगी थी।

तब मेरब असाहिल के इस पत्र को पढ़ कर जैसे बिल्कुल ही शलथ हो गई थी। वह तब तुरन्त ही ये नहीं समझ पाई थी कि असाहिल की ओर से ये कैसा पत्र और किस प्रकार की सूचना थी, और उसकी ओर से ये सब बताने का अब कौन सा रिश्ता उन दोनों के मध्य बाकी रह गया था? उसकी

ज़िन्दगी के कमजोर और ठंडे पड़े हुये प्यार के गीतों के लिये ये असाहिल की तरफ से कैसा सन्देश था कि जिसे जान कर मेरब न तो खुश हो सकी और ना ही ढंग से रो सकी। बजाय इसके कि उसे असाहिल से सहानुभूति होती, उसे उस पर कोई तरस या रहम आता, वह उसके बारे में फिर कुछ सोचती, उसके मस्तिष्क में यही तस्वीर बनी कि जिस तरह से एक दिन ठोकर लगने पर उसने अपना निर्णय परमेश्वर के हाथों में छोड़ दिया था, उसी का जबाब आज परमेश्वर ने असाहिल को दे दिया है। वह अब कौन होती है, उसके इस निर्णय के बीच में आने वाली? जिस प्रकार से एक दिन उसने चन्द लम्हों की 'रिमझिम' की फुहार में अपने जीवन की नाव खेने की असफल चेष्टा की थी, और जो उसने किया था, उसकी इन सब बातों का परिणाम कुछ कुछ ऐसा ही होना था। इसमें कोई भी आश्चर्य करने जैसी क्या बात हो सकती है। पत्र को पढ़ कर मेरब आरंभ में कुछ देर को विचलित तो हुई, मगर बाद में उसने इसे सामान्य सी बात समझते हुये अपने दिमाग से निकाल भी दिया। सोच लिया कि अब इन बातों से सरोकार ही क्या रहा। कहानी खत्म नहीं हुई तो क्या हुआ, लिखने के लिये पृष्ठ तो समाप्त हो ही चुके हैं।

उसके पश्चात असाहिल के कई और भी पत्र मेरब के पास आये। दो बार वह उससे व्यक्तिगत रूप से मिला भी। मेरब समझ गई कि असाहिल की ओर से इन सारी कोशिशों का एक ही मतलब था कि वह फिर से लौट कर उसके पास आ जाये, क्योंकि वहां अब किसी अन्य किरायेदार के ठहरने जैसी बात फिर से थी? मेरब क्यों उत्तर देती। क्यों वह उसमें दिलचस्पी लेती? लेती भी तो क्यों और किस आधार पर? पहले जो कुछ हुआ, वह क्या तमाशा बनने के लिये कम रहा था? फिर यदि रिमझिम इस दुनियां से नहीं गई होती तो क्या असाहिल कभी भी लौटने वाला था? इस प्रकार से सोचते हुये मेरब ने ये अपने आप ठोस निर्णय कर लिया कि अब यदि असाहिल का कोई पत्र आया या वही उससे फिर से मिला तो वह उसको अपना अंतिम निर्णय सुना कर इस समय नष्ट करने वाले नाटक का दृश्य सदा के लिये बंद कर देगी।

....सोचते सोचते मेरब का सिर जैसे भारी हो गया। मन और शरीर दोनों ही में कहीं जैसे खलबली सी मच गई थी। उसने सिर उठा कर देखा तो कमप्यूटर के मॉनीटर का स्क्रीन काला होकर जैसे अंदर ही अंदर सिसकने लगा था। उसे होश आया तो पता चला कि इतनी सी देर में वह अपने

अतीत की न जाने कितनी ही बातों को क्रम से दोहरा गई थी। वह जानती है कि उसके अपने इस अतीत में, उसके खुद के दुख थे। अफसाने थे। मन के किसी कोने में पर्त पर्त कर के रखे हुये किसी के प्रति टूटे हुये विश्वास के वे टुकड़े थे कि जिन्हें आज उसे फिर से छूते हुये भी डर लगता था। असाहिल के साथ जो कुछ भी हुआ है, उसका दुख तो मेरब को हो सकता है, परन्तु जो कुछ स्वयं मेरब ने झेला है, उसके प्रति किसने कभी सोचा है? फिर वह अब कौन होती है, किसी के भी जीवन की नाव को पार लगाने वाली? जो मांझी किसी पतवार के वास्तविक महत्व को ही न समझ सका हो उसे तो वह क्या, कोई दूसरा भी किनारा नहीं दिला सकेगा। उसकी तो सारी किश्तियां पहले ही से जल चुकी हैं, और वह आज तक संसार के सागर की मझाधारों में भटकती फिर रही है। डूबते हुये किनारों को देख कर कौन पार जाने की कल्पना कर सकता है? शायद कोई भी तो नहीं? इसलिये बेहतर है कि अपनी ज़िन्दगी की इस न भूलने वाली दास्तान को वक्त का कोई काला पृष्ठ समझ कर सदा के लिये बंद कर दिया जाये तो ही भला होगा। साथ चलने वाला हरेक पथिक सदा के लिये हमसफर नहीं बन सकता है, जीवन की इस सच्चाई का मर्म सब ही को जान

लेना चाहिये। फिर जीवन का कितना बड़ा और सच्चा तथ्य है कि, जब इंसान को इंसान से प्यार न मिल सके तो उसे कम से कम एक बार परमेश्वर की झोली में भी हाथ डाल कर देख
लेना चाहिये।